1 कुरिन्थियों अध्याय 15

रविवार, 01 दिसम्बर 2019

हम पिछले कुछ महीनों से 1 कुरिन्थियों की पत्री का अध्ययन कर रहे हैं, और अब हम इस पत्री के अंत के निकट पहुँच रहे हैं, अर्थात् अंतिम दो अध्यायों तक।

आत्मिक वरदानों और उनके उचित प्रयोग के विषय को संबोधित करने के बाद, प्रेरित पौलुस अब एक और महत्वपूर्ण विषय की ओर ध्यान देते हैं—मरे हुओं के पुनरुत्थान की ओर। पुनरुत्थान के विषय में दो मुख्य चिंताएँ थीं जिन्हें पौलुस संबोधित करते हैं: पहली, क्या वास्तव में मृत्यु के बाद जीवन है, और दूसरी, जब हम मरे हुओं में से जी उठेंगे तो हमारे शरीर किस प्रकार के होंगे।

हमारे अध्ययन के उद्देश्य के लिए, हम इस अध्याय को 7 भागों में विभाजित करते हैं:

- सुसमाचार और पुनरुत्थान (15:1-8)
- पौलुस का अनुग्रह द्वारा बुलाया जाना (15:9-11)
- मरे हुओं का पुनरुत्थान (15:12-19)
- मसीह में, पुनरुत्थान की हमारी आशा (15:20-28)
- पुनरुत्थान को ध्यान में रखकर जीवन जीना (15:29-34)
- एक महिमामय, अविनाशी, पुनरुत्थान का शरीर (15:35-49)
- अंतिम जय (15:50-58)

हम प्रत्येक भाग को पहले पढ़ेंगे, उस भाग पर विचार साझा करेंगे, और फिर अगले भाग की ओर बढ़ेंगे।

सुसमाचार और पुनरुत्थान (15:1-8)

1 हे भाइयो, अब मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूँ जो पहले सुना चुका हूँ, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और
जिसमें तुम स्थिर भी हो।
2 उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो
तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ।
3 इसी कारण मैं ने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी कि पवित्रशा□स्त्र के वचन के अनुसार
यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया,
4 और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा,
5 और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया।
6 फिर वह पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से बहुत से अब तक जीवित हैं पर कुछ सो
गए।
7 फिर वह याकूब को दिखाई दिया तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया।
8 सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूँ।

पौलुस उन्हें उस सुसमाचार की स्मृति दिलाते हैं, जिसे वह वचन 3 और 4 में संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं: *"कि मसीह हमारे पापों के लिये मरे... और वह गाड़े गए, और तीसरे दिन जी उठे... ।"* मसीह की

मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान तथा उनसे जो कुछ भी परिणाम निकला, वह सब मिलकर वास्तव में सुसमाचार है। इस मुख्य सत्य को प्रस्तुत किए बिना सुसमाचार की कोई भी प्रस्तुति पूर्ण नहीं हो सकती।

मसीह की मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान सब *"पवित्रशास्त्रों के अनुसार"* हुआ, अर्थात् उस अनुसार जो पहले से ही पुराने नियम के पवित्रशास्त्रों में भविष्यवाणी के रूप में लिखा गया था।

- **वचन 2:**

उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ।

"स्मरण रखते हो" (यूनानी शब्द *'काटेचो' –'Katecho'*) का अर्थ है—सुरक्षित रखना, दृढ़ता से थामे रखना, दृढ़ अधिकार में बनाए रखना।

हमें उस सुसमाचार के संदेश को, जिसे हमने विश्वास किया है और जिसके द्वारा हमारा उद्धार हुआ है, दृढ़ता से पकड़े रहना चाहिए, उसे सुरक्षित और अपने अधिकार में बनाए रखना चाहिए। यह दो बातों की ओर संकेत करता है: (A) ऐसे शत्रु या प्रभाव होंगे जो इसे हम से छीनने का प्रयास करेंगे, और (B) यदि हम सुसमाचार के संदेश में विश्वास को छोड़ दें, तो हमने "व्यर्थ विश्वास किया," अर्थात् हमारा पहले का विश्वास करना निष्फल (बिना लाभ के) हो जाता है, यदि हम वर्तमान और निरंतर विश्वास में स्थिर न रहें।

- **वचन 5-8:**

प्रेरित पौलुस इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि पुनरुत्थित मसीह के अनेक (500 से अधिक) प्रत्यक्षदर्शी गवाह थे, जिनमें से बहुत से लोग उस समय जीवित थे जब पौलुस कुरिन्थियों को लिख रहे थे। **यीशु मसीह का पुनरुत्थान निर्विवाद था। यदि पुनरुत्थान के तथ्य के विषय में 500 प्रत्यक्षदर्शी न्यायालय में साक्ष्य दें, तो पुनरुत्थान सिद्ध ठहरेगा।** ध्यान देने योग्य बात: जो बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है, वह यह है कि इन 500 प्रत्यक्षदर्शियों में ऐसे लोग भी सम्मिलित थे जो पहले यीशु मसीह के विरोधी थे। इनमें उनके अपने भाई भी थे (यूहन्ना 7:3–5; प्रेरितों के काम 1:14), और स्वयं शाऊल भी।

पौलुस का अनुग्रह द्वारा बुलाया जाना (15:9-11)

9 क्योंकि मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ, वरन् प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैं ने परमेश्वर की कलीसिया को सताया था।
10 परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ। उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैं ने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।
11 इसलिये चाहे मैं हूँ, चाहे वे हों, हम यही प्रचार करते हैं, और इसी पर तुम ने विश्वास भी किया।

महान प्रेरित पौलुस यह कभी नहीं भूले कि वह एक समय उन लोगों को सताते थे जो यीशु पर विश्वास करते थे, और यह भी कि प्रभु का उन पर कितना महान अनुग्रह हुआ।

वचन 10 अनुग्रह और कार्यों के आपसी संबंध की एक अद्भुत समझ को प्रकट करता है—एक ही सिक्के के दो पहलू। **हम जो कुछ भी हैं, उसके अनुग्रह से हैं। फिर भी, हम अपनी प्रतिक्रिया के द्वारा यह निर्धारित करते हैं कि हमारे प्रति बढ़ाया गया परमेश्वर का अनुग्रह व्यर्थ जाएगा या उसके पूर्ण उद्देश्यों को हमारे द्वारा पूरा करेगा।** पौलुस यह बताते हैं कि उन्होंने अन्य प्रेरितों / नेताओं की तुलना में *"और भी अधिक परिश्रम किया।"* फिर भी, इस अधिक परिश्रम करने की सामर्थ्य को भी वह अपने जीवन पर कार्य कर रहे परमेश्वर के सामर्थी अनुग्रह को ही मानते हैं।

परमेश्वर हम में से प्रत्येक को हमारे जीवन पर उसके बुलाहट और दान के अनुसार अनुग्रह प्रदान करते हैं। परन्तु हम अपनी प्रतिक्रिया (परिश्रम, अनुशासन, धैर्य, विश्वास, आदि) के द्वारा यह तय करते हैं कि यह अनुग्रह "व्यर्थ" जाएगा या परमेश्वर के राज्य के लिए बहुत फल उत्पन्न करेगा।

मरे हुओं का पुनरुत्थान (15:12-19)

12 इसलिये जब कि मसीह का यह प्रचार किया जाता है कि वह मरे हुओं में से जी उठा, तो तुम में से कितने कैसे कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं?
13 यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा;
14 और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है, और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है।
15 वरन् हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे; क्योंकि हम ने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी कि उसने मसीह को जिला दिया, यद्यपि नहीं जिलाया यदि मरे हुए नहीं जी उठते।
16 और यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा;
17 और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है, और तुम अब तक अपने पापों में फँसे हो।
18 वरन् जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नष्ट हुए।
19 यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।

मसीही विश्वास पूरी तरह से इसी एक सत्य पर निर्भर करता है—मसीह का मरे हुओं में से पुनरुत्थान। यदि यीशु मरे हुओं में से नहीं जी उठे, तो हमारा सारा प्रचार और हमारा सारा विश्वास व्यर्थ और खाली है, और हम झूठ को फैलाने वाले ठहरते हैं। इसका यह भी अर्थ है कि हम अब तक अपने पापों में खोए हुए हैं, हमारे पास कोई उद्धारकर्ता नहीं है, और मृत्यु के बाद के जीवन की कोई आशा नहीं है।

- **वचन 19:**

यदि मसीह में हमारा विश्वास केवल इस अस्थायी जीवन के लिए ही होता, तो वास्तव में उसका कोई वास्तविक प्रभाव नहीं होता। यदि ऐसा होता, तो पौलुस कहते हैं कि *"हम सब मनुष्यों में सबसे अधिक दयनीय ठहरते।"* **परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम मसीह में आशा के साथ जीवन जीते हैं—न केवल इस जीवन में, बल्कि आने वाले जीवन में भी।** यह हमारे प्रतिदिन के जीवन को जीने के तरीके में कितना बड़ा अंतर उत्पन्न करता है!

मसीह में, पुनरुत्थान की हमारी आशा (15:20-28)

20 परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें वह पहला फल हुआ।
21 क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया।

22 और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे,
23 परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से: पहला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उसके लोग।
24 इसके बाद अन्त होगा। उस समय वह सारी प्रधानता, और सारा अधिकार, और सामर्थ्य का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा।
25 क्योंकि जब तक वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है।
26 सबसे अन्तिम बैरी जो नष्ट किया जाएगा, वह मृत्यु है।
27 क्योंकि "परमेश्वर ने सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया है," परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके अधीन कर दिया गया है तो प्रत्यक्ष है कि जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, वह आप अलग रहा।
28 और जब सब कुछ उसके अधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके अधीन हो जाएगा, जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।

- **वचन 20:**

परन्तु क्योंकि हम जानते हैं कि यीशु मसीह मरे हुओं में से जी उठे हैं, इसलिए हम जानते हैं कि हम भी जिलाए जाएँगे—क्योंकि वह पहिलौठे थे—अर्थात् किसी ऐसी बात की शुरुआत, जिसके बाद और लोग भी आएँगे।

पहिलौठा (यूनानी शब्द *अपार्चे – Aparche*)—आरंभ, किसी बात की शुरुआत।

मसीह वह पहले व्यक्ति हैं जो मरे हुओं में से जी उठे और एक मांस और लोहू के शरीर से अविनाशी, आत्मिक, महिमामय शरीर में प्रवेश किया।

मसीह में, जो उसके हैं, वे जीवित किए जाएँगे, क्योंकि वही आरंभ था। यीशु के कारण हमें मरे हुओं के पुनरुत्थान का यह भरोसा प्राप्त है।

यीशु का पुनरुत्थान हमारे पुनरुत्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं। क्योंकि वह जीवित है, हम भी जीवित रहेंगे (यूहन्ना 14:19; रोमियों 6:5)।

- **वचन 24–28:**

हम न केवल पुनरुत्थान में भरोसा रखते हैं, बल्कि हम यह भी जानते हैं कि सभी शत्रु, यहाँ तक कि मृत्यु भी, समाप्त कर दी जाएगी—फिर मृत्यु न रहेगी।

यीशु राज्य करेंगे (यह मसीह के 1000 वर्ष के सहस्राब्दी राज्य की ओर संकेत करते हैं) जब तक कि सभी शत्रु उनके अधीन न कर दिए जाएँ। वह सब प्रकार की प्रधानता (मुख्यताओं), अधिकार और सामर्थ्य का, यहाँ तक कि मृत्यु का भी अंत कर देंगे। सब कुछ मसीह के अधीन कर दिया जाएगा। और मसीह स्वयं स्वेच्छा से पिता के अधीन रहेंगे।

15:27 (गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल)
वचन कहता है कि, "क्योंकि परनेश्वर ने सब कुछ यीशु मसीह के पाँवों तले कर दिया है।" परन्तु जब वह कहते हैं कि "सब कुछ उनके अधीन कर दिया गया है," तो यह प्रगट है कि परमेश्वर, जिन्होंने सब कुछ यीशु के अधीन किया, वह स्वयं उनके अधीन नहीं है।

इस प्रकार, यीशु में हमें मरे हुओं के पुनरुत्थान का यह निश्चय प्राप्त है, और हम जानते हैं कि मृत्यु स्वयं पराजित की जाएगी, और यीशु सब पर राज्य करेंगे।

पुनरुत्थान को ध्यान में रखकर जीवन जीना (15:29-34)

29 नहीं तो जो लोग मरे हुओं के लिये बपतिस्मा लेते हैं वे क्या करेंगे? यदि मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यों उनके लिये बपतिस्मा लेते हैं?
30 और हम भी क्यों हर घड़ी जोखिम में पड़े रहते हैं?
31 हे भाइयो, मुझे उस घमण्ड की शपथ जो हमारे मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय में करता हूँ कि मैं प्रतिदिन मरता हूँ।
32 यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में वन-पशुओं से लड़ा तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे जिलाए नहीं जाएँगे, "तो आओ, खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो मर ही जाएँगे।"
33 धोखा न खाना, "बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।"
34 धर्म के लिये जाग उठो और पाप न करो; क्योंकि कुछ ऐसे हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते। मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता हूँ।

- **वचन 29:**

प्रेरित पौलुस अब उन बातों की ओर देखते हैं जो कलीसिया के बाहर के लोग करते हैं। वह कलीसिया के बाहर के लोगों (अविश्वासियों) की ओर संकेत करते हैं जो मरे हुओं के लिये बपतिस्मा लेते हैं। उनका ऐसा करना यह दर्शाता है कि उन्हें किसी न किसी प्रकार यह विश्वास है कि मृत्यु के बाद जीवन है। **ध्यान दें:** प्रेरित पौलुस हमें मरे हुओं के लिये बपतिस्मा लेने की शिक्षा नहीं दे रहे हैं; वह केवल कलीसिया के बाहर के उन लोगों की ओर संकेत कर रहे हैं जिनमें यह प्रथा है।

- **वचन 30–32:**

पौलुस इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि वह हर घड़ी अपने जीवन को जोखिम में डालते हैं। वह जिन बलिदानों को देते हैं और जिन खतरों को सहते हैं, वे इस सीमा तक हैं कि ऐसा प्रतीत होते हैं कि वह प्रतिदिन मरते हैं। इफिसुस में (जहाँ से वह यह पत्र लिख रहे थे) पौलुस बताते हैं कि उन्होंने ऐसा विरोध सहा, मानो उन्होंने इफिसुस में जंगली पशुओं से लड़ाई की हो। यदि हम मरे हुओं के पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं करते, तो यह सब क्यों सहें? तब तो हम केवल वर्तमान जीवन पर आधारित जीवन जी सकते हैं।

- **वचन 33–34:**

हमें इस बात के प्रति सावधान रहना चाहिए कि हम किन लोगों और किन बातों को अपने ऊपर प्रभाव डालने देते हैं। बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है। हमें उन लोगों को, जो परमेश्वर को नहीं जानते, अपने जीवन पर प्रभाव डालने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

व्यवहारिक अनुप्रयोग:

1. **हमें ऐसे लोगों के रूप में जीवन जीना चाहिए जो पुनरुत्थान पर विश्वास करते हैं और उसके प्रति आश्वस्त हैं**—इस सत्य पर कि मसीह जीवित हैं और इसलिए हम भी उनके साथ अनन्त जीवन के लिये जिलाए जाएँगे। इसका अर्थ है कि हम अपने जीवन पर परमेश्वर की बुलाहट और मसीह में अपने विश्वास के कारण कठिनाइयों को सह सकते हैं।

जैसा कि पौलुस ने 2 कुरिन्थियों में लिखा:

2 कुरिन्थियों 4:16-18
16 इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।
17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है;
18और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं।हमें सुसमाचार और पुनरुत्थान में अपने विश्वास की रक्षा करनी चाहिए।

2. **हमें सुसमाचार और पुनरुत्थान में अपने विश्वास की रक्षा करनी चाहिए।** ऐसे लोग हैं जिनके पास यह समझ नहीं है, और हमें उन्हें अपने जीवन पर बुरा प्रभाव डालने की अनुमति नहीं देनी चाहिए — कि हम कैसे जीवन जीएं और कौन से निर्णय लें।

एक महिमामय, अविनाशी, पुनरुत्थान का शरीर (15:35-49)

35 अब कोई यह कहेगा, "मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ आते हैं?"
36 हे निर्बुद्धि! जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता।
37 और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूँ का चाहे किसी और अनाज का।
38 परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उसको देह देता है, और हर एक बीज को उसकी विशेष देह।
39 सब शरीर एक समान नहीं: मनुष्यों का शरीर और है, पशुओं का शरीर और है; पक्षियों का शरीर और है; मछलियों का शरीर और है।
40 स्वर्गीय देह हैं और पार्थिव देह भी हैं। परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और है, और पार्थिव का और।
41 सूर्य का तेज और है, चाँद का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, (क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है)।
42 मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशवान् दशा में बोया जाता है और अविनाशी रूप में जी उठता है।
43 वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है, और सामर्थ्य के साथ जी उठता है।
44 स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है : जबकि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है।
45 ऐसा ही लिखा भी है, कि "प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम जीवित प्राणी बना" और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना।
46 परन्तु पहले आत्मिक न था पर स्वाभाविक था, इसके बाद आत्मिक हुआ।
47 प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात् मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है।
48 जैसा वह मिट्टी का था, वैसे ही वे भी हैं जो मिट्टी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही वे भी हैं जो स्वर्गीय हैं।
49 और जैसे हम ने उसका रूप धारण किया जो मिट्टी का था वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे।

प्रेरित पौलुस यहाँ यह समझाते हैं कि हमारे पुनरुत्थान के शरीर उन शरीरों से बहुत भिन्न होंगे जो हमारे पास वर्तमान में हैं।

हमारे वर्तमान शरीर नश्वर हैं, मिट्टी से बने हुए हैं, नाशमान हैं, और प्राकृतिक हैं। ये शरीर अपमान और निर्बलता में भूमि में बोए जाते हैं।

हमारे पुनरुत्थान के शरीर अमर होंगे, अविनाशी होंगे, आत्मिक होंगे, और महिमा तथा सामर्थ्य में जिलाए जाएँगे। *"...हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।"* (1 यूहन्ना 3:2)।

उन लोगों को उत्साह दें जिन्होंने हाल ही में मसीह में अपने प्रियजनों को खोया है।

अंतिम जय (15:50-58)

50 हे भाइयो, मैं यह कहता हूँ कि मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न नाशवान् अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।
51 देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ: हम सब नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जाएँगे,
52 और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे।
53 क्योंकि अवश्य है कि यह नाशवान् देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
54 और जब यह नाशवान् अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा: "जय ने मृत्यु को निगल लिया।
55 हे मृत्यु, तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?"
56 मृत्यु का डंक पाप है, और पाप का बल व्यवस्था है।
57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।
58 इसलिये हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।

प्रेरित पौलुस पुनरुत्थान पर इस शिक्षा को मसीह के अपने लोगों के लिये लौटकर आने की ओर संकेत करते हुए समाप्त करते हैं, जैसा कि उन्होंने 1 थिस्सलुनीकियों 4 में भी लिखा है। उस क्षण, हम में से जो जीवित होंगे, एक पल में हमें पुनरुत्थान के शरीर प्राप्त होंगे। मृत्यु पर जय पाई जाएगी। स्वयं परमेश्वर हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें मृत्यु पर यह विजय प्रदान करेंगे।

- **वचन 58:**

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, यहीं और अभी, **हम बने रहते हैं—अडिग, अचल, और सदा प्रभु के काम में आगे बढ़ते हुए, क्योंकि हम जानते हैं कि मसीह के लिये किया गया हर कार्य ऐसा फल उत्पन्न करेगा जो अनन्तकाल तक बना रहेगा।**

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार, 01 दिसम्बर 2019
1 कुरिन्थियों अध्याय 15

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *1 कुरिन्थियों अध्याय 15*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1. *इस अध्याय में पौलुस द्वारा बताए गए अनुसार, हमारे विश्वास के लिये यीशु मसीह के पुनरुत्थान के महत्व की चर्चा करें। अन्य पवित्रशास्त्र के संदर्भों से भी अतिरिक्त विचार शामिल करें (जैसे: रोमियों 1:4; रोमियों 4:25; रोमियों 8:11; रोमियों 14:19; 1 पतरस 1:3)।*

2. *पुनरुत्थान में विश्वास करना, एक विश्वासी के रूप में हमारे यहीं और अभी के जीवन जीने के तरीके को किस प्रकार प्रभावित करता है?*

3. *उस शरीर की तुलना करें जो हमारे पास अभी है और उस पुनरुत्थान के शरीर की, जो हमें एक दिन प्राप्त होगा।*

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1. *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2. *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3. *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org